Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
July to September 2025, E-Journal, Vol. I, Issue LI (51), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ द्वारा राष्ट्रीय एकता अखण्डता से संबंधित प्रस्ताव (ई.सन 1950 से ई.सन् 2000 के विशेष संदर्भ में)

रणधीर झा* अन्नु झा जैमिनी खानवे*****

* इंदिरा प्रियदर्शिनी महाविद्यालय, छिन्दवाड़ा (म.प्र.) भारत
** इंदिरा प्रियदर्शिनी महाविद्यालय, छिन्दवाड़ा (म.प्र.) भारत
*** इंदिरा प्रियदर्शिनी महाविद्यालय, छिन्दवाड़ा (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ भारत का सामाजिक और सांस्कृतिक संगठन है जो संपूर्ण विश्व में अपने सामाजिक एवं सांस्कृतिक कार्यों के लिये जाना जाता है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की नियमित गतिविधियों के अलावा वर्ष भर में किये जाने वाली, अन्य विशेष गतिविधियों के संचालन की कार्य-योजना का निर्धारण राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ की, अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा एवं अखिल भारतीय केन्द्रीय कार्यकारी मंडल की बैठकों के माध्यम से किया जाता रहा है। अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का सर्वोच्च निर्णय लेने वाला या शीर्ष नीति निर्धारण करने वाला निकाय है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की अखिल भारतीय कार्यकारी मंडल एवं अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा जिन प्रस्तावों को पारित करता है, वह संघ के कार्यकर्ताओं के लिये पूरे वर्ष के दौरान, कार्य एवं विमर्श का विषय होता है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, उक्त कार्य योजना के अनुसार ही समाज को संगठित व जागरूक करने का कार्य करता है। हम कह सकते हैं कि, राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ द्वारा पारित प्रस्ताव संघ की विचारधारा, राष्ट्र चिंतन, देश-सेवा का प्रतिबिम्ब होते हैं। राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ द्वारा ई. सन् 1950 से ई. सन् 2000 तक अनेक प्रस्ताव पारित किये गये, जिनमें से राष्ट्रीय एकता व अखण्डता के संदर्भ में पारित किये गये प्रस्ताव, राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ की दूर-दृष्टि का परिणाम है।

शब्द कुंजी – राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, आर.एस.एस, प्रस्ताव, संघ, अखिल भारतीय प्रतिनिधी सभा, राष्ट्रीय एकता, अखण्डता।

प्रस्तावना –राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आर.एस.एस) में अपने स्थापना वर्ष 1925 से ही राष्ट्रीय चिंतन की उत्कृष्ठ परंपरा रही है। 'राष्ट्र-प्रथम' का सूत्र वाक्य राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का मूल आधार है। व्यक्ति निर्माण से परिवार निर्माण, परिवार निर्माण से समाज निर्माण और समाज निर्माण से राष्ट्र-निर्माण की यह भारतीय संकल्पना, वेदों और उपनिषदों के आधार पर प्राप्त की गई है। समाज की एक न्यूनतम इकाई व्यक्ति से व्यक्ति निर्माण, व्यक्ति निर्माण से राष्ट्र निर्माण का लक्ष्य प्राप्त करना, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की विचारधारा का प्रमुख अंग माना गया है। व्यक्ति के विचार करने की क्षमता का विकास, अध्ययन में अभिरूचि (स्वाध्याय), अनुशासन, आडम्बर रहित सादगीपूर्ण जीवन-शैली, संघ के कार्यकर्ताओं की पृष्ठभूमि है। राष्ट्र का समग्र आधार पर चिंतन, और उस समग्रता के आधार पर प्राप्त निर्णयों का प्रतिपालन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की क्रिया-विधि का महत्वपूर्ण भाग है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का संघीय स्वरूप इस प्रकार निर्मित किया गया है कि, किसी विषय पर निर्णय, शीर्ष पर स्थापित केवल एक व्यक्ति द्वारा नही लिया जाता, अपितु संघीय ढाँचे में स्थापित अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा एवं अखिल भारतीय कार्यकारी मंडल द्वारा पारित प्रस्तावों के आधार पर निर्णय लिया जाता है। उक्त पारित प्रस्तावों पर लिये गये निर्णयों के अनुसार ही, वर्ष भर संघ के स्वंय-सेवक अपने-अपने कार्यक्षेत्र में सक्रिय रहकर, नियमित गतिविधियों के अलावा निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त करने का अभिष्ट प्रयास करते है।

अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा की बैठक वर्ष में एक बार होती है, वहीं अखिल भारतीय कार्यकारिणी मंडल की बैठक वर्ष में दो बार होती है। अखिल भारतीय कार्यकारी मंडल में रखे गये प्रस्तावों, को अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा विचार-विमर्श उपरांत प्रस्ताव को पारित करती है। उक्त सभा से प्रस्ताव पारित होने के पश्चात ही प्रस्ताव अनुकूल कार्य स्वयं सेवकों द्वारा आरंभ किया जाता है। अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा एवं अखिल भारतीय केन्द्रीय कार्यकारिणी मंडल के द्वारा प्रतिवर्ष कभी एक या किसी-किसी वर्ष में एक से अधिक प्रस्ताव पारित किये जाते है।

शोध का उद्देश्य – राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की विचारधारा 'राष्ट्रीय एकता और अंखण्डता' की मूल अवधारणा पर आधारित है। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ में ई.सन् 1950 से ई. सन् 2000 तक के 50 वर्षो में, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा एवं अखिल भारतीय कार्यकारी मंडल ने जिन प्रस्तावों को पारित किया उनका ऐतिहासिक और समीक्षात्मक अध्ययन इस शोध का प्रमुख उद्देश्य है।

शोध प्रविधि-शोध हेतु ई. सन् 1950 से ई. सन् 2000 तक 'राष्ट्रीय एकता और अखण्डता' हेतु राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ द्वारा पारित प्रस्तावों का ही अध्ययन किया गया है। जो एतिहासिक रूप से प्राथमिक स्त्रोत के रूप में प्रयुक्त होता है।

शोध परिसीमन –प्रस्तुत शोध केवल, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा एवं अखिल भारतीय कार्यकारी मंडल में ई. सन् 1950 से ई. सन् 2000 तक पारित प्रस्तावों के ऐतिहासिक व समीक्षात्मक अध्ययन तक सीमित है।

राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ में 'हिन्दु' व 'राष्ट्रीय' शब्द को एक-दूसरे का पर्याय माना गया है, इससे भिन्न नही। अत: शोध में उक्तमानक शब्दों के भाव को भी सम्मिलित किया जाना अपेक्षित होगा। राष्ट्रीय स्वंय सेवक संघ की अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा ने ई. सन् 1950 से ई.सन् 2000 के 50 वर्षो के कालखण्ड में राष्ट्रीय एकता और अखण्डता विषय पर उक्त कालखंड में निम्न प्रस्तावों को पारित किया था। राष्ट्रीय एकता और अखण्ड़ता विषय को मूल आधार बनाकर निम्नलिखित शीर्षक से प्रस्ताव पारित किये।

क्रं	वर्ष	प्रस्ताव क्रं	विषय
1	1950	1	विभाजन के दुष्परिणाम और हमारा कर्तव्य
2	1953	1	कश्मीर के विलय हेतु आंदोलन
3	1959	1	नेहरू-नून समझौता
4	1960	2	साम्प्रदायिक कट्टरपन्थियों की राष्ट्रविरोधी गतिविधियाँ
5	1961	2	मास्टर तारासिंह का अनशन
6	1961	1	असम में विध्वसंकारी षड्यंत्र
7	1961	1	राष्ट्रीय एकता सम्मेलन
8	1962	1	पूज्य श्री गुरूजी का चीनी आक्रमण पर संबोधन
9	1980	2	असम में विदेशी घुसपैठ
10	1990	2	आतंकवादी उभार
11	1994	3	उत्तर पूर्वांचल की चिन्ताजनक स्थिति
12	1995	2	उत्तरांचल की स्थिति
13	1996	2	अग्निगर्भ असम
14	1997	2	विस्फोटक उत्तर पूर्वांचल
15	1997	2	शीर्षक अप्राप्त

उक्त वर्णित सूची से ज्ञात होता है कि, राष्ट्रीय एकता व अखंण्डता से संबधित विषय पर ई. सन् 1950 से ई. सन् 2000 तक के 50 वर्षो में कुल 15 प्रस्ताव राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के द्वारा पारित किये गये थे। इसमें से 09 प्रस्ताव अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा के द्वारा पारित किये गये, 06 प्रस्ताव अखिल भारतीय कार्यकारी मंडल की बैठक में पारित किये गये थे। ई. सन् 1950 से 2000 ई. सन् तक अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा द्वारा समस्त विषयों पर कुल 108 प्रस्ताव पारित किये गये थे। कुल 84 प्रस्ताव अखिल भारतीय कार्यकारी मंडल द्वारा समस्त विषयों पर पारित किये गये थे। इस तरह राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ द्वारा कुल- 192 प्रस्ताव उक्त कालवधि में पारित किये गये।

वर्ष 1947 में हुये भारत-पाकिस्तान के बँटवारे उपरांत देश में भड़की हिंसा, और पाकिस्तान में निवासरत हिन्दू जो विपत्ति में थे, उन हिन्दूओं की सहायता, भारत किस प्रकार कर सकता है, के विषय में वर्ष 1950 में परमपूज्यनीय गोलवलकर गुरूजी ने चिंता व्यक्त की थी। इस दौरान उन्होंने स्वंय-सेवकों से अपील की थी कि, वे भारत आये हिन्दुओं की उदारतापूर्वक सहायता करें। परिणामस्वरूप बँटवारा के उपरांत, भारत आये हिन्दुओं को यहॉ बसाने के लिये, तात्कालीन भारत सरकार ने जगह प्रदान की एवं राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वंय सेवकों ने पर्याप्त मात्रा में राहत सामग्री प्रदान की थी।

वर्ष 1962 में भी पू.श्री गुरू जी ने भारत के प्रबलशत्रु चीन द्वारा भारत पर आक्रमण के समय भारत की जनता से अपील करते हुये कहा था कि, यह भारत-चीन युद्ध नही अपितु 'धर्म-युद्ध' है। इस धर्म-युद्ध में धैर्य और वीरता के साथ सभी भारतीयों को कटिबद्ध रहना होगा। इस तरह संघ, भारतीय नागरीकों को जागरूक कर, भारतीयों में राष्ट्रीयता की भावना को प्रबल बनाने में सहायक सिद्ध हुआ।

भारत की स्वतंत्रता प्राप्ति के समय जम्मू-कश्मीर का भारत में विलय नही हुआ था। भारत में जम्मु-कश्मीर के विलय हेतु, जम्मू कश्मीर प्रजा-परिषद निरंतर आंदोलन करते रहते थे, एवं उक्त आन्दोलनों का केन्द्रीय सरकार द्वारा दमन किया जाता था। यह आन्दोलन जम्मू कश्मीर प्रजा-परिषद के द्वारा किया जाता था, किंतु तत्कालीन भारत सरकार, उस आन्दोलन में राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ को आन्दोलनकारी मानकर संघ के कार्यकर्ताओं को भी जेल भेजती रही। राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ की अखिल भारतीय प्रतिनिधि सभा ने ई सन् 1953 में सरकार के विरूद्ध निंदा प्रस्ताव पारित कर सरकार से आग्रह किया था कि, जम्मु-कश्मीर में बन्दी बनाये गये संघ कार्यकर्ताओं को तत्काल जेल से मुक्त करे, तब सरकार ने संघ के कार्यकर्ताओं को मुक्त करना आंरभ किया था।

वर्ष1959 में पं. नेहरू ने पाकिस्तान के साथ समझौता कर भारत का 'बेरूबाडी' क्षेत्र पाकिस्तान को सौंपने का प्रयास किया था, जिसका घोर विरोध राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ के द्वारा किया गया। इस हेतु राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ ने वर्ष 1959 में प्रस्ताव लाकर सम्पूर्ण देश में राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ के कार्यकर्ताओं ने उक्त 'नेहरू-नून' समझौता को भंग करने हेतु अभियान प्रांरभ किया। राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ, इस तथ्य से पूर्णत: परिचित था कि, चीन की गतिविधियाँ भारत के प्रतिकूल है। इस विचार को ध्यान में रखकर, सन् 1950 से ई.सन् 1960 के दशक में, भारत में हो रहे सांप्रदायिक तनाव को दृष्टिगत रखते हुये राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ ने ई.सन् 1961 में राष्ट्रीय एकता व अखण्डता के विषय में प्रस्ताव पारित कर इस असमंजस युक्त काल में राष्ट्रीय-चेतना को भारतीय समाज में जाग्रत करने व हिन्दू समाज को संगठित करने का आवहान स्वयं-सेवकों से किया। भारत-चीन युद्ध के एक वर्ष पूर्व से ही, राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ द्वारा भारत के विभिन्न क्षेत्रों में राष्ट्रीय-चेतना जाग्रत करने के अभियान का परिणाम यह रहा, कि वर्ष 1962 में हुये, भारत-चीन युद्ध के दौरान प्रत्येक भारतीय नागरिक ने अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ की राष्ट्रवादी विचारधारा का प्रभाव यहाँ स्पष्ट परिलक्षित हुआ, एवं भारत की एकता-अखण्ड़ता हेतु भारत के सभी नागरिकों ने एक-जुटता का परिचय दिया था।

असम व उत्तर पूर्वांचल, जो भारत राष्ट्र का ही भाग है। किंतु तत्कालीन समय में राजनैतिक व सामाजिक दृष्टि से केन्द्रीय सरकार द्वारा लगभग उपेक्षित ही किया गया था। राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ, उक्त भू-भाग पर केन्द्रीय सरकार का ध्यान आकृष्ठ करने हेतु, निरंतर प्रयत्नशील रहा। सन् 1960 से सन् 2000 के चार दशक में उक्त समस्या को दृष्टिगत रखते हुये, ई.सन् 1961, 1980, 1994, 1995, 1996, 1997 में 06 प्रस्ताव राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ के द्वारा पारित किये थे। ई. सन् 1990 से 2000 के दशक में असम व पूर्वांचल की समस्या ने विकराल रूप धारण कर लिया था। उक्त दशक में असम क्षेत्र में विदशी घुसपैठिये एक समस्या बनते जा रहे थे। स्थानीय सामाजिक संगठन उन मुस्लिम घुसपैठियों का विरोध करते आ रहे थे। राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ इन समस्त परिस्थितियों से भली-भाँति अवगत था। असम में मुस्लिम घुसपैठिये, तो उत्तर पूर्वांचल जैसे-मेघालय, अरूणाचल

प्रदेष में ईसाई धर्मातरण की घटनाओं में तेजी से वृद्धि दिखाई पड़ रही थी। वहीं मणिपुर में वर्ष 1990 के दशक से ही मैतई जनजाति में आरक्षण प्रक्रिया को लेकर स्थानीय जनता में असंतोष की वृद्धि हो रही थी। उत्तर-पूर्व के सभी सात राज्यों में स्थिति चिंताजनक बनी हुई थी। कहीं घुसपैठिया, कही धर्मातंरण, कहीं जन-जातियों में भेद का दृष्टिकोण तो कहीं किसी राज्य में विदेशी ताकतों का हस्तक्षेप, आदि कारणों से उक्त राज्यों में सामाजिक व राजनैतिक क्षेत्र में असंतोष की लहर व्याप्त थी। परिणाम स्वरूप, स्थानीय निवासी सुख-शांति को विस्मृत कर रहे थे एवं स्वयं को उपेक्षित अनुभव कर रहे थे। राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ, भारत के उत्तर से दक्षिण व पूर्व से पश्चिम तक भारत को एक राष्ट्र के रूप में स्मरण करता आ रहा है-

'रत्नाकर द्योत पदां हिमालयकिरीटिनम।
ब्रम्हराजर्षिश्त्नाढ्यां वन्दे भारत मातरत।।
ध्येयो रैवतकोविन्ध्यो गिरिश्चारावलिस्तथा।।'

(एकात्मता मंत्र से उद्धत)

इस विचारधारा के आधार पर निर्मित राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ के लिये, उक्त राज्यों की स्थिति दु:ख प्रदान करने वाली थी। उक्त कार्य हेतु राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ ने निरंतर पारित प्रस्तावों के माध्यम से स्वंय सेवकों को वर्ष के दौरान राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ की कार्य-योजना अनुसार क्रियान्वयन हेतु दिशा-निर्देश जारी किये। राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ के इस ध्यानाकर्षण के फलस्वरूप उक्त क्षेत्रों में मुस्लिम तुष्टीकरण, ईसाई धर्मांतरण, विदेशी हस्तक्षेप, आंतकवाद, घुसपैठिया नियंत्रण हेतु शासन व जन-सामान्य जागरूक होने लगा। तब तात्कालिक सरकार द्वारा एतद् विषयक् नियम-उपनियमों का निर्माण व क्षेत्र के विकास हेतु प्रयास आंरभ हुये। स्थानीय-जन, मुस्लिम तुष्टीकरण, ईसाई धर्मांतरण, विदेषी हस्तक्षेप, आंतकवाद, घुसपैठिया आदि की घटनाओं के कारण अत्यंत प्रभावित हुये थे, विशेषकर-हिन्दू, परिणाम स्वरूप संघ ने उक्त समस्या को संपूर्ण भारत में विमर्श का माध्यम बनाकर राष्ट्रहित में आवश्यक कदम उठाने हेतु तात्कालीन षासन व्यवस्था से आग्रह किया।

राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ ने, ना केवल राष्ट्रीय चिंतन हेतु प्रस्तावों को पारित किया है। अपितु संघ ने देश व समाज हित में सक्रिय अन्य दलों के नेता अथवा व्यक्ति के साथ सत्ता द्वारा किये हुये अन्याय के विरूद्ध भी उनके साथ खड़ा रहा एवं समय-समय पर उनके समर्थन में प्रस्ताव पारित किये। वर्ष 1961 में अकाली दल के नेता मास्टर तारासिंह के समर्थन में प्रस्ताव पारित कर सिक्ख पंथ को हिन्दू धर्म का ही अभिन्न अंग स्वीकार करने हेतु वातावरण का निर्माण किया। एक ओर जहाँ संघ ने व्यक्ति, नेता, का समर्थन किया है, वहीं दूसरी ओर राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ ने ई.सन् 1990 में पारित प्रस्ताव के माध्यम से सत्ता की प्रशासनिक प्रणाली का दुरूपयोग कर जनता की नृशंस्त: हत्या करने हेतु तात्कालिक सत्ता पक्ष की जोरदार भर्त्सना की है। यही संघ की विशेषता रही है।

उत्तर पूर्व क्षेत्र के निम्न राज्यों में हम इसाईयों की जनसंख्या का विवरण निम्नानुसार है।

राज्य	वर्ष 1951	वर्ष 1971	वर्ष 1991
असम	337953 (4.10%)	667151 (4.46%)	667151 (4.46%)
मणिपुर	63694 (11.84%)	279243 (26.03%)	421702 (29.67%)
मेघालय	149378 (22.66%)	475267 (22.66%)	702854 (52.61%)
नागालैंड			
अरूणाचल प्रदेश			

उक्त अध्ययन से स्पष्ट है कि, तालिका में दर्शित राज्यों में ईसाईयों की (धर्मांतरण उपरांत) संख्या में अभूतपूर्व वृद्धी दर्ज की गई है। यह तालिका

निष्कर्ष- इस तरह ई.सन् 1950 से ई.सन 2000 तक राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ द्वारा पारित प्रस्तावों का अवलोकन-विश्लेषण उपरांत हम देखते हैं कि, राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ ने भारत की संकट-कालीन स्थितियों में भारत की राष्ट्रीय एकता व अखण्डता बनाये रखने हेतु अपने स्वंयसेवको को समय-समय पर विभिन्न पारित प्रस्तावों के द्वारा निर्देश प्रदान किए और राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ के स्वंय-सेवकों ने संघ की मंशानुरूप उस कार्य को संपादित किया। राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ के लिये राष्ट्र की एकता ही सर्वोच्च प्राथमिकता है, इसलिये विभिन्न अतिक्रमण के उपरांत भी संघ ने निर्धारित लक्ष्य प्राप्त करने हेतु अपनी अद्वितीय संगठनात्मक शक्ति व अभूतपूर्व प्राचीन विचारधारा के आधार पर हिन्दु और भारत को अखण्डता के सूत्र में बाँधे रखने में राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ ने महत्वपूर्ण योगदान दिया हैं।

ई.सन् 1950 से ई.सन् 2000 तक द्वारा पारित विभिन्न प्रस्तावों से यह परिणाम परिलक्षित होता है कि, तत्कालीन सत्ता को राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ ने भारत में उत्पन्न होने वाली संभावित खतरों से आगाह किया था। राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ ने, ना केवल भारत की सत्ता पक्ष को सचेत किया, अपितु राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ के स्वंय सेवकों ने राष्ट्रीय एकता में विखण्डन ना होने पाये, इस हेतु समाज को संगठित कर राष्ट्रीय एकता-अंखण्डता को बनाये रखने हेतु समाज का एकत्रीकरण करने के साथ ही विघटनकारी ताकतों का सामना भी सफलतापूर्वक किया। भारत में हो रहे ईसाई धर्मातंरण को रोकने हेतु नियम-कानून सत्ता पक्ष से बनवाने में सफल रहा है। राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ, ना केवल हिन्दू समाज को संगठित करने का प्रयास करता रहा है, अपितु भारत और हिन्दू विरोधी विचारों के विरूद्ध भी राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ ने निर्भीक होकर, निडरता के साथ अपनी वाणी मुखर की है, यही राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ व स्वयं-सेवकों की पहचान है।

भारत में उत्पन्न हाने वाली नकारात्मक परिस्थितियों का सही आंकलन व अनुमान लगाने में राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ बहुत हद तक सफल रहता है। राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ के चिंतन से उत्पन्न हुये पारित प्रस्तावों का अध्ययन राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ की इसी सत्यता को प्रदर्शित करते हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ द्वारा पारित प्रस्ताव।

****